प्रा क्क थ न

डॉ. रांगेय राधव हिन्दी के प्रसिध्द कहानीकार हैं। उन्होंने साहित्य की प्राय : सभी विधाओं में कुछ न कुछ लिखा है। काव्य, नाटक, निंबध, रितोर्ताज, आलोचना, उपन्यास, शोध-प्रबन्ध-- " गोरखनाथ [गोरखनाथ और उनका युग] " तथा कहानी-साहित्य भी लिखा है। किशोरावस्था से लिखने का छंद और विषमताओं से जूझनेका साहस रखनेवाले रांगेय राधवजीने अपनी प्रिय कहानियों में सम्पूर्ण मानवता के जीवन के यथार्थता का चित्रण अत्यन्त खूबीपन से किया है।

डॉ. रांगेय राधव की प्रिय कहानिओं पर शोध - कार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैंने उनका " मेरी कीप्रिय कहानियाँ " यह कहानी संग्रह पढा। अपने-समाय के और भारत के मध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्राकंन इनके साहित्य में जितना है, उतना अन्य किसी कहानीकार के कहानियों में मुझे नजर नहीं आया। उनकी प्रिय कहानियों ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया। फलस्वरूप मैंने रांगेय राधवजो की कहानियों का अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया। इस लघु शोध-प्रबन्ध के सहारे यह संकल्प साकार हुआ है।

डॉ. रांगेय राधव पर अब तक अनेक शोध-छात्राओं ने शोध-कार्य किया होगा। पर मेरी जानकारी के अनुसार डॉ. कमलाकर गंगावणेजी ने " कथाकार रांगेय राधव " नामक बडा शोध - प्रंबध किया है और प्रा. सौ. छाया ए. पाटीलने " रांगेय राधव के प्रगतिवादी उपन्यासों का मूल्याकंन " शीर्षक के अन्तर्गत सन १९८८ में अपना लघु है। शोध - प्रबंध लिखा है।

इस विषय का अध्ययन करतें समय मेरे सामने निम्नानुसार कुछ प्रश्न थे ...

१] प्रिय कहानी साहित्य में रांगेय राधव का स्थान ?

२] रांगेय राधवजो को प्रिय कहानियों में चित्रित समस्याएँ ?

३] रांगेय राधव की प्रिय कहानियों का भाव पक्ष और कलापक्ष का क्या महत्व ?

४] रांगेय राधव की प्रिय कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या हैं ?

रांगेय राधव की प्रिय कहानियों की मीमांसा करते समय मैंने उपरोक्त सवालों का जबाब ढूंढने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबन्ध सात अध्यायों में विभाजित है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में रांगेय राधव का व्यक्तिगत परिचय दिया है। इस अध्याय में रांगेय राधव के जन्म से लेकर आज तक के जीवनक्रम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तिगत व्यक्तित्व परिचय में वंश परम्परा, जन्मतिथि, स्थान और नाम, पारिवारिक संस्कार - मातृ, पिता, भाई, पत्नी, मित्र आदि का भी योगदान रहा है। उसे इसमें देखा गया है।

द्वितीय अध्याय में रांगेय राधव के साहित्यगत परिचय पर संक्षेप में विचार किया गया है। इसमें स्वयं लेखक ने दी गई रचना-सूची को उजागर किया गया है। उनके साहित्यीक कृतित्व पर सरसरी नजर डाली गयी है।

तृतीय अध्याय इस लघु शोध - प्रबंध की जान है। इसमें रांगेय राधव जी के प्रिय कहानी- साहित्य की कहानियों का विवरण, लेखन के संबध में दृष्टिकोण कहानियों का वर्गीकरण तथा शीर्षकों की मीमांसा को गयी है। अन्त में संक्षेप निष्कर्ष देकर सन्दर्भ -सूची भी दी गयी है।

चौथा अध्याय भी इस लघु शोध- प्रबन्ध का मर्म है। प्रतिभा सम्पन्न लेखक की कहानियों के विविध अंगो से भावपक्ष को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें विषय - वस्तु, भावों का द्वंद्व, विविध भावपक्ष में - सामाजिक पक्ष, पारिवारिक पक्ष, धार्मिक पक्ष, मनोवैज्ञानिक पक्ष और

साथ में निष्कर्ष भी दिया गया है। उसके साथ ही साथ अन्त में सन्दर्भ सूची भी दी गई है।

पाँचवें अध्याय में मीमांसा की गयी है - प्रिय कहानियों के कलापक्ष की। प्रिय कहानियों की योजना का बोध, प्रत्येक कहानियों का कथानक, संवाद, पात्र और चरित्र चित्रण, वातावरण-चित्रण, शीर्षक, भाषा शैली, उद्देश तथा सन्दर्भ सूची को योजना से स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है।

छठे अध्याय में प्रत्येक प्रिय कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या हैं ? मैंने उन्हें प्रस्तुत करने की कोशिश की हैं।

सातवाँ अध्याय है " उपसंहार "। यह लघु- प्रबन्ध के विषय का सार रूप है। रांगेय राघव जी की प्रिय कहानियों की मीमांसा करने के पश्चात् जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार के रूप में देने का प्रयास हुआ है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में सन्दर्भ-सूची को स्पष्टता से दिया गया है।

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध की पूर्ती में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा समय - समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रध्देय गुरुजन, हितचिंतकों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

// कृतज्ञता //
======

लघु शोध - कार्य का दृढ संकल्प श्रेध्देय गुरुवरडॉ. ज्ञानराज काशीनाथ गायकवाड जी के कृपापूर्ण निर्देशन का फल है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे सम्पन्न होता ? आपने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्त तक महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। हमेशा आपने इस लघु शोध - प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन

एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की है। प्रस्तुत लघु शोध - प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का ही फल है। आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए नामुमकिन है। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशिर्वाद का मैं निरन्तर अभि- - लाषी रहूँगा ।

गुरुवर डॉ. वसंत मोरे, प्रा. विजय विठ्ठल जाधव, डॉ. द्रवीड, डॉ. के. पी. शहा, प्रा. मिस रजनी भागवत, प्रा. तिवले, प्रा. मुजावर, प्रा. प्रा. कण्बरकर, प्रा. सौ. जाधव, प्रा. हिरेमठ, डॉ. पाटील, डॉ. अर्जुन चव्हाण डॉ. कृष्णा इंगोले, और जिन्होंने मुझे स्नेह से सहाय्यता की वे प्रा. सौ. छाया ए. पाटील का आशिर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ। डॉ. कमलाकर गंगावणेजी का भी मैं हमेशा ऋणी रहूँगा। मैं प्रा. आर्. डी. कदम और प्रा. टी. एन्. लोखंडेजी का विशेष आभारी हूँ।

आदरणीय आमदार गणपतरावजी देशमुख, वसंतराव पाटील [सांगोला सूतगिरणी :चेअरमन], वसंतराव कसबे [वार्ताहार], प्रा. भुजंगराव कांबळे, प्रा. मुकुंद पाटील, प्रा. भारत खिलारे, श्री. गोरख सोनलकर आदि का मैं आभारी हूँ।

मित्रवर प्रा. मच्छिंद्र बाबर, सुरेन्द्र ढोबळे, कन्या प्रशाला व ज्यु. कालेज नाझरे ने मुझे दिनों - दिन अपने कार्य में बने रहने के लिए स्नेह एवं सद्भावपूर्ण सुझाव देकर अपनी मित्रता की प्रामाणिकता सिध्द कर दी है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पिताजी - कोंडिबा साधू कसबे, माताजी - सत्यभामा कोंडीबा कसबे सभी भाई एवं मेरी भाभी सौ. कविता का आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ थीं। बहन के नाते सौ. सुभद्रा उबाळे, सौ. विजया साबळे, सौ. सुवर्णा उबाळे का भी आभारी हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारि- -यों के प्रति मैं आभारी हूँ।

अन्त में इस लघु शोध - प्रबन्ध को अतिशिघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्री. किशोर शिवलिंग क्षीरसागर, बार्शी ने किया उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध - प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखता हूँ।

आपका कृपाभिलाषी,

दिनांक : १६ / ५ / १९९४.

दिलीप कोंडीबा कसबे
[शोध- छात्र]

****